वैदिकवाङ्मय में स्त्री-विमर्श

(भाग-१- स्त्री-शिक्षा)

डॉ० विश्वेशः

सहायकाचार्यः, संस्कृतविभागः

महात्मा-गाँधी-केन्द्रीय-विश्वविद्यालयः, बिहारः

vishujnu@gmail.com

SNKT2006 - संस्कृतवाङ्मये स्त्री-विमर्शः

एम० ए० द्वितीयसत्रम्

स्त्री विमर्श का इतिहास

- **प्राचीन स्त्री विमर्श का इतिहास-**
- **आधुनिक स्त्री विमर्श का इतिहास-**
  - **पाश्चात्य जगत् में स्त्री विमर्श का इतिहास-**
    - अमेरिकी एवं यूरोपीय क्रान्तियाँ
  - **भारत में स्त्री विमर्श का इतिहास -**
    - १९ वीं सदी के समाज सुधार आन्दोलन-
      - महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, राजा राम मोहन राय, राधाकान्त देव, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर।
    - महिलाओं द्वारा स्त्री विषयक जागरण-
      - सावित्रीबाई फुले, पंडिता रमाबाई, ताराबाई शिंदे।
    - २० वीं सदी के अन्तिम चतुर्थांश में स्त्री-विमर्श

स्त्री विमर्श का आधुनिक यथार्थ

१. घर परिवार, समाज नीति और राष्ट्रनीति में नारी की अस्मिता, उसके अधिकार तथा अधिकारों के लिए संघर्ष चेतना से जुड़े संवाद की संकल्पना।

२. स्त्रीवाद (फ़ेमिनिस्ट मूवमेन्ट) के रूप में पुरुष या पितृसत्ता के विरुद्ध आन्दोलन।

३. स्त्री शोषण के अध्ययन के रूप में।

४. देहवादी संघर्ष।

५. मात्र साहित्यिक विमर्श।

स्त्री विमर्श की प्राचीन भारतीय संकल्पना

भारतीय संस्कृति के पोषक

- समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री-पुरुष की समानता की चेतना का प्राधान्य ।
- भारतीय समाज में पुरुष और नारी को समाजरूप एवं राष्ट्ररूप रथ के दो चक्र माना गया है ।
- समाज में स्त्रियों को अत्यन्त गरिमामय, उच्च स्थान प्राप्त था –

" अहं केतुरहं मूर्धाऽहमुग्रा विवाचनी ।
ममेदनु क्रतुं पतिः सेहानाया उपचरेत् ॥"

संस्कृति के आलोचक

- समाज के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री स्थिति के उत्पीडन एवं दासता के दृष्टान्त उपलब्ध।
- स्त्री भोग और विलासिता का साधनमात्र ।
- स्त्रियों को शिक्षा, समानता और अधिकारों से वंचित किया जाता था । वह पुरुष की दासीमात्र बन कर रह गई थी।
- आज के समय में भी स्त्री की शोचनीय दशा की जिम्मेदार वही प्राचीन मान्यताएँ-

" ढोलगंवार शूद्र पशु नारी ये सब ताडन के अधिकारी"

"स्त्रीशूद्रो नाधीयताम्"

संस्कृत वाङ्मय में स्त्री विमर्श

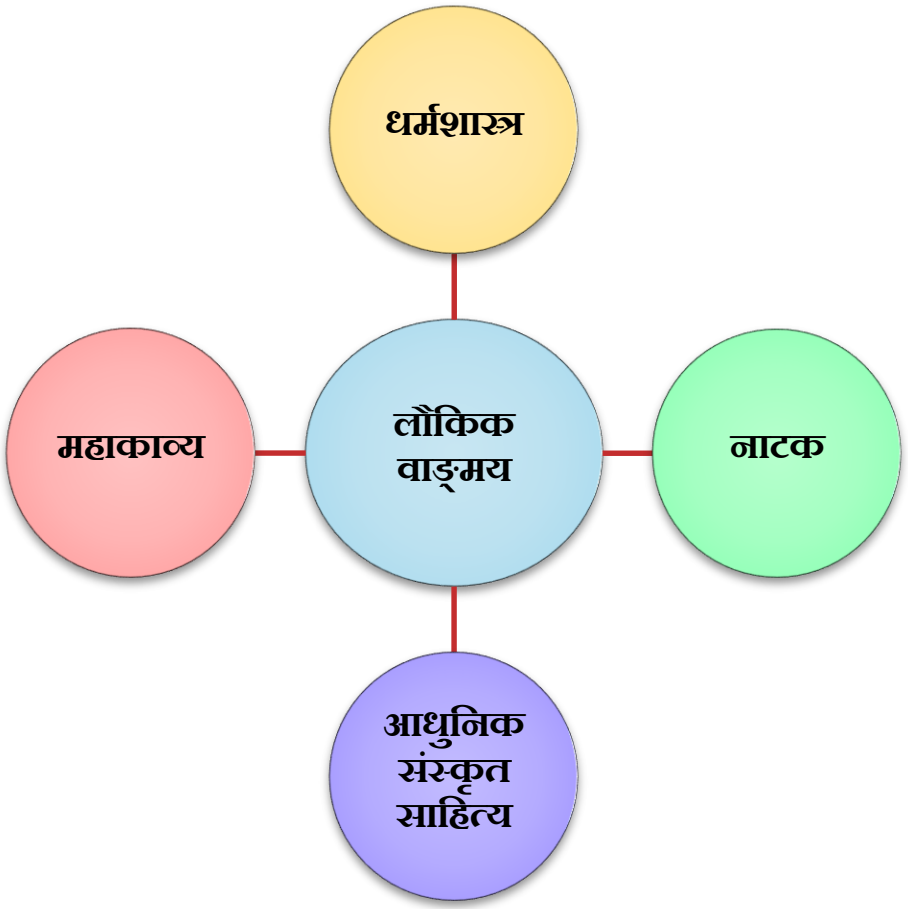

वैदिक संहिताओं में प्रयुक्त कतिपय स्त्रीवाचक शब्दों का निर्वचन-

संहिताकाल में स्त्री की सामाजिक, मानसिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक स्थिति को जानने हेतु स्त्री के लिए प्रयुक्त कतिपय शब्दों के निर्वचन परमावश्यक है-

नारी →

- "नराः मनुष्याः नृत्यन्ति कर्मसु"- निरुक्त ५/१/३
- ऋक्-संहिता ७/२०/५, ७/५५/८, ८/७७/८, १०/१८/७, १०/८६/१०-११ में "नृ" धातु से निष्पन्न नर और नारी का प्रयोग वीरता का कार्य करने, दान देने एवं नेतृत्व करने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।
- "नारी" शब्द का प्रयोग विवाहकाल में कन्यादान एवं पाणिग्रहण के पश्चात् 'लाजा होम' के अवसर पर सर्वप्रथम प्रयुक्त किया जाता था। पाराशर गृह्य-सूत्र १/६/२

नारि →

- "नृणां महावीरार्थीनाम् उपकारित्वात् नारिः"- सायणाचार्य
- अथर्वसंहिता को छोडकर किसी अन्य संहिता में प्रयुक्त नहीं।

मेना →

- "मानयन्ति एनाः"- निरुक्त ३/२१/२
- पुरुषों द्वारा आदर पाने वाली स्त्री। ऋक्-संहिता १/६२/७, १/९५/६, २/३९/२

जाया

- "तज्जाया जाया भवति यदस्यां जायते पुनः"
- "जायेदस्तम्" 'हे इन्द्र ! जाया ही घर है । ऋक्-संहिता ३/५३/४

स्त्री

- "स्त्यायाति गर्भो यस्यामिति"
- " अधिकरणसाधना लोके स्त्री स्तायत्यस्यां गर्भ इति" अर्थात् लोक में स्त्री ही आधार है।
- "स्त्री ही ब्रह्मा बभूविथ" ऋक्-संहिता ८/३३/१९

सूनरी

- "सुष्ठु उनत्ति आर्द्रीकरोति चित्तम्"
- ऋक् संहिता में उषा देवी के लिए 'सूनरी' शब्द का प्रयोग हुआ है। जिसका शाब्दिक अर्थ है- शोभा बढाने वाली । ऋक्-संहिता १/४८/५

पुरन्धि

- "स्वजनसहितं पुरं धारयतीति- पुरन्धि"
- पुरन्धि (नगर-नेत्री) शब्द का प्रयोग नारी के लिए ऋक्-स्हिता में "अग्निर्नारीं वीरकुक्षीं पुरन्धिम्" के रूप में हुआ है । ऋक्-संहिता १/४८/५

पत्नी

- "पाति रक्षति" के रूप में पत्नी शब्द सहधर्मिणी का बोधक है।
- "पत्युः यज्ञे संयोगो यया"
- ऋक्-संहिता १०/८५/३९, अथर्व संहिता ९/३/७, तैत्तिरीय संहिता ६/५/१-४

वैदिक काल में स्त्री-शिक्षा

- वैदिक संहिताओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उस समय ब्रह्मचर्याश्रम की अनिवार्यता सभी बालक-बालिकाओं के लिए समान रूप से थी । समाज में सुव्यवस्थित शिक्षण संस्थाएँ विद्यमान थी, जिनमें समानरूप से छात्र एवं छात्राएँ प्रविष्ट होती थीं। यही कारण है कि ज्ञानार्जन हेतु ऋषिकुलों एवं गुरुकुलों में बालिकाओं के प्रवेश तथा उनके ब्रह्मचर्य का वर्णन वेदों में स्पष्ट रूप से प्राप्त होता है-

  ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम् ॥, अथर्व. ११/५/१८

- माता-पिता परमेश्वर से यह प्रार्थना किया करते थे कि उनकी पुत्री पंडिता अथवा ब्रह्मवादिनी बनें-

  अथ य इच्छेद् दुहिता मे पंडिता जाये त सर्वमायुरियादिति तिलौदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तं अश्नीयातां ईश्वरौ जनयितवै ॥, बृहदारण्यकोपनिषद्. ६/४/१७

- **वैदिक संहिताओं में 'सरस्वती' के रूप में बहुत्र विदुषी स्त्री का स्मरण किया गया है, तथा उससे अपने श्रेष्ठ ज्ञान एवं कर्मों द्वारा समाज में सद्गुणों एवं सत्कर्मों की शिक्षा देने की प्रार्थना की गई है-**

पावका नः सरस्वती वाजेभिर् वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ यजुर्वेद २०/८४

अर्थात् हे **वाजिनीवती-** ज्ञान-कर्मनिष्ठ, **सरस्वती-** विदुषी नारी, **वाजेभिः-** विद्या- बलों और कर्मों से, **नः पावकाः-** हमें पवित्र करने वाली हो, **धियावसुः-** ज्ञान और सत्कर्म की शिक्षा द्वारा निवास करने वाली , **यज्ञम्-** गृहाश्रम-यज्ञ एवं ज्ञान-यज्ञ को, **वष्टु-** मनोयोग से सञ्चालित करती रहे।

विद्या, वाणी, नदी, नाडी आदि के अतिरिक्त 'सरस्वती' का एक अर्थ- 'विदुषी नारी' भी

सरस्वतीम्- "बहुविधं सरो वेदादिशास्त्रविज्ञानं विद्यते यस्याः तां विज्ञानयुक्ताम् अध्यापिकां स्त्रियम्"। यजुर्वेदभाष्य- ९/२७

त्वे विश्वा सरस्वती श्रितायूंषि देव्याम्।

शुनहोत्रेषु मत्स्व प्रजां देवी दिदिड्ढि नः॥ ऋ० २/४१/१७

- **उपनयन संस्कार-**

पुराकल्पे तु नारीणां मौञ्जीबन्धनमिष्यते।

अध्यापनं च वेदानां सावित्रीवचनं तथा॥ यमस्मृति

श्रद्धया दुहिता तपसोऽधिजाता स्वसा ऋषिणा भूतकृतां बभूव।

सा नो मखले मतिमाधेहि मेधामयो नो धेहि तप इन्द्रियं च॥ अथर्व. ६/१३३/४

- यज्ञोपवीता स्त्री के गुणों की विस्तृत चर्चा करते हुए कहा गया है कि- उपनीता नारी यज्ञोपवीत धारण करने के पश्चात् इतनी सबल हो जाती थी कि वह अत्यन्त दुष्ट एवं पथभ्रष्ट पति को भी सन्मार्ग पर लाकर खडा कर देती थी-

देवा एतस्यामवदन्त पूर्वे सप्त ऋषयस्तपसे ये निषेदुः।

भीमा जाया ब्राह्मणस्योपनीता दुर्धा दधाति परम्मे व्योमन्॥ ऋ. १०/१०९/४

- **वैदिक काल में उपनीता स्त्रियों के दो प्रकार -**

१. ब्रह्मवादिनी-

- वेदाध्ययन में ही अपना समय व्यतीत करने वाली
- ब्रह्मचर्य के तीनों नियमों का पालन-१. अग्नि में हवन करना, २. वेदों का अध्ययन तथा ३. भैक्ष्यचर्या

२. सद्योद्वाहा-

- जो स्त्रियाँ उपनयन के कुछ समय पश्चात् विवाह कर लेती थीं।

"यत्तु हारीतेनोक्तं द्विविधाः स्त्रियो ब्रह्मवादिन्यः सद्योद्वाहाश्च। तत्र ब्रह्मवादिनीनामुपनयनमग्नीबन्धनं वेदाध्ययनं स्वगृहे च भिक्षाचर्य्येति। सद्योवधूनां तु उपस्थिते विवाहे कथञ्चिदुपनयनमात्रं कृत्वा विवाहः कार्यः।"

संस्कारमयूख- पृ० ४०२

मन्त्रद्रष्ट्री ऋषिकाएँ

- बृहद्देवता में २७ मन्त्रदृष्ट्री ऋषिकाओं का वर्णन-

घोषा गोधा विश्ववारा अपालोपनिषन् निषत्। ब्रह्मजया जुत्सूर्नाम अगस्तस्य स्वसा दितिः॥

इन्द्राणी चेन्द्रमता च सरमा रोमशोर्वशी। लोपामुद्रा च नद्यश्च यमी नारी च शाश्वती॥

श्रीर्लक्ष्मी सर्पराज्ञी वाक् श्रद्धा मेधा च दक्षिणा। रात्री सूर्या च सावित्री ब्रह्मवादिन्य ईरिताः॥

शौनकः, बृहद्देवता २/८९/९५

ऋषिकाएँ	दृष्ट मन्त्र	मन्त्रों में नाम
१. अगस्त्य स्वसा	ऋ० १०/६०/६	-
२. अदिति	ऋ० १०/७२/१-९	४, ५, ८, ९
३. अपाला	ऋ० ८/९१/१-७	७
४. इन्द्राणी	ऋ० १०/१४५/१-६, १०/८६/१-२३	११, १२
५. इन्द्रमातरः	ऋ० १०/१५३/१-५	-

मन्त्रद्रष्ट्री ऋषिकाएँ

ऋषिकाएँ	दृष्ट मन्त्र	मन्त्रों में नाम
६. इन्द्र-स्नुषा	ऋ० १०/२८/१	-
७. उर्वशी	ऋ० १०/१५/२,४,५,७,११,१३,१५,१६,१८	१०, १७
८. कुशिका रात्रि	ऋ० १०/१२७/१-८	१, ८
९. गोधा	ऋ० १०/१३४/६-७	-
१०. घोषा काक्षीवती	ऋ० १०/३९/१-१४, १०/४०/१-१४	५
११. जुहूः	ऋ० १०/१०८/१-७	५
१२. दक्षिणा-प्रजापत्या	ऋ० १०/१०७/१-११	१
१३. यमी	ऋ० १०/१५४/१-५	-
१४. यमी वैवस्वती	ऋ० १०/१०/१,३,६,७,११,१३	७, ९, १४
१५. रोमशा	ऋ० १०/१२६/१-७	७

मन्त्रद्रष्ट्री ऋषिकाएँ

ऋषिकाएँ	दृष्ट मन्त्र	मन्त्रों में नाम
१६. लोपामुद्रा	ऋ० १/१७९/१-६	४
१७. वाक्	ऋ० १०/१२५/१-८	-
१८. विश्ववारा	ऋ० ५/२८/१-६	१
१९. शची	ऋ० १०/१५९/१-६	-
२०. श्रद्धा	ऋ० १०/१५१/१-५	१-५
२१. शश्वती	ऋ० ८/१/१-३४	३४
२२. सरमा	ऋ० १०/१०८/२,४,६,८,१०,११	१, ५, ७, ९
२३. सूर्या	ऋ० १०/८५/१-४७	६-१०, १२-१५, १७, ३४, ३५
२४. सार्पराज्ञी	ऋ० १०/१८९/१-३	-
२५. सिकता	ऋ० ९/८६/११-२०	-

सन्दर्भ-

- ऋग्वेद संहिता, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर, १९६५
- यजुर्वेद, दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी, १९५७
- सामवेद, दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी, १९६५
- अथर्ववेद, दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी, १९५८
- वैदिक नारी, रामनाथ वेदालंकार, समर्पण शोध संस्थान, साहिबाबाद, गाजियाबाद, २०००
- वैदिक संहिताओं में नारी, डॉ० मालती शर्मा, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, १९९०
- वेदों में नारी, डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्, ज्ञानपुर भदोही, उ. प्र., २००५
- धर्मशास्त्र का इतिहास, डॉ० पाण्डुरंग वामन काणे, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, १९९२
- The Position of Women in Hindu Civiligation, A.S. Altekar, Banaras, 1938.
- Women in Ancient India, Clarisse Bader, Chowkhamba Sanskrit Series Varanasi, 1964.

धन्यवादः